© INNOVATIVE RESEARCH THOUGHTS | Refereed | Peer Reviewed | Indexed
ISSN : 2454 – 308X | Volume : 03 , Issue : 11 | October – December 2017

गोविन्द मिश्र के उपन्यासों में चित्रित समाज एवं संस्कृति का स्वरूपः एक विवेचना

सुरेश कुमारी, शोध छात्रा
हिन्दी विभाग जम्मू विश्वविद्यालय

सार

गोविन्द मिश्र हिंदी के श्रेष्ठतम कथाकारों में से एक हैं। उन्होंने अब तक बारह उपन्यास, बारह कहानी संग्रह एवं यात्रावृत्तांत, निबंधएवं कविताओं का लेखन कार्यकिया है। उनके महत्त्वपूर्ण उपन्यासों मेंवह अपना चेहरा, धूल पौधों पर, लाल पीली जमीन, पांच आंगनोंवाला घर, तुम्हारी रोशनी में, फूल इमारतें और बंदर, धीर समीर, कोहरे में कैद रंग आदि हैं। गोविन्द मिश्र को साहित्य अकादमी, व्यास सम्मान, एवं सरस्वती सम्मान से सम्मानित कियागया है। भोपाल मेंरहकर वे अनवरत हिंदी साहित्य की सेवा में संलग्न हैं। समाज बहुत कुछ धर्माधारित हुआ करता है। अनेक प्रकार की जातियों एवं समाजों के आपसी मेल-मिलाप के प्रभाव से एक नए तरह का समाज और नई तरह की संस्कृति विकसित होती है। व्यक्ति का सम्बन्ध अपने समाज से होता है। जिस समूह में व्यक्ति पला-बढ़ा होता है उस समाज और संस्कृति से उसका जुड़ाव हुआ करता है। अपने समूह से बाहर निकलकर जब व्यक्ति अन्य समाजों से अपना परिचय बढ़ाता है या अन्य समाज से उसका साक्षात्कार होता है, तो वह अपने और दूसरे की संस्कृति और समाज की तुलना करता है। अपने समाज की खामियों को दूर करते हुए उससे अच्छाई ग्रहण करता है।

मुख्य शब्दः धर्माधारित, साक्षात्कार, संस्कृति और समाज, आदि।

प्रस्तावनाः

भारतीय समाज और यहाँ पर गठित विभिन्न समाजों के बारे में 'भारतीय समाजः संरचना और परिवर्तन' नामक ग्रन्थ में ए. एल. दोषी, पी. सी. जैन ने समाज को परिभाषित करते हुए लिखा है - "समाज और कुछ न होकर अन्तःक्रियाओं की एक व्यवस्था है। भारतीय समाज की अपनी एक विशिष्टता रही है अपनी इस विशिष्ट व्यवस्था की अन्तः क्रिया बाहरी परम्पराओं की व्यवस्थाओं के साथ हुई है, यह भारत आतंरिक और बाहरी व्यवस्थाओं की अन्तःक्रिया का परिणाम है।"